रजरजरजलग [रजत्रयलगैर्युक्तं मालवं केचिदूचिरे Mm. 19. 14] मालव.

रससससससलग [रात्सपञ्चकमन्तलगं पुटभेदमत्र गतागतम् Jk. 2. 237] पुटभेद.

सजजभरसलग [सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका Chm. 2. 207] गीतिका, गीता, प्रमदानन.

सभरनमयलग (13-7) [सभरा नम्या लगिति त्रयोदशयतिर्मत्तेभ-विक्रीडितम् Vr. 3. 98. 4] मत्तेभविक्रीडित.

21 **प्रकृतिः** (13)

तरभनजभर (7-7-7) [त्रौ भ्नौ ज्भौ रः कथागतिः छछैः H. 2. 346] कथागति.

नजजजजभर [नगणजकारचतुष्कभरैरपि रञ्जिता वनमञ्जरी Jk. 2. 240] वनमञ्जरी.

नजभजजजर [नजभजजा जरौ यदि तदा गदिता सरसी कवीश्वरैः Chm. 2. 213] चित्रलता, चम्पकमालिका, रुचिरा, सरसी, सलिलनिधि, सिद्धि, धृतश्री, सिद्धक.

नजभजजजर (11-10) [नजभजजाजरौ हरहरिद्विरतिः खलु पञ्चकावली Vr. 3. 99. 2.] पञ्चकावली, शशिवदना.

भभभभभर [भौ भभभाश्च भरौ यदि कीर्तय पुत्रक मत्तविलासिनीम् Vr. 3. 99. 3] मत्तविलासिनी.

भरननजजय [भरौ ननौ जजौ यो नरेन्द्रम् Pp. 2. 202] नरेन्द्र.

भरनरनरर (10-11) [भ्रौ त्रौ त्रौ रो ललितविक्रमो जैः H. 2. 347] ललितविक्रम.

ममतननसस (8-5-8) [मौ तनिसा मत्तक्रीडा जलैः H. 2. 348] मत्तक्रीडा.

मरभनयय (7-7-7) [म्रौ भ्नौ यौ यः प्रकृत्यां स्वरगिरिविरतिः स्रग्धरा नाम वृत्तम् Jk. 2. 238] स्रग्धरा.

रजतननसस [र्जतनिसाश्चन्दनप्रकृतिः H. 2. 349] चन्दनप्रकृति, श्रेणि.

रनरनरनर [त्री र्नौ रस्तरङ्गः H. 2. 352] तरङ्ग, तरङ्गमालिका.

रनरनरनर (6-6-6-3) [सुरनर्तकी रनरना रनरा विरती रसर्तु-शास्त्रगुणैः Mm. 19. 17] सुरनर्तकी.

रसनजनभर (11-10) [पद्मसद्म रसान्नजनभरं हरविरतिश्च गता-गतम् Jk. 2. 243] पद्मसद्म.

22 **आकृतिः** (12)

तभयजसरनग (7-15) [मत्तेभाख्यं तभयजसरनगयुक्तं स्वरार्व-फणिभिन्नम् Mm. 19. 18] मत्तेभ.

नजभजभजभग [नजौ भजौ भजभगा अश्वललितम् Bh. 16. 100–101] अश्वललित.

नभजभजभजग [नगणतो भजगणौ त्रिधा गुरुपरौ यदा मदन-सायकः Jk. 2. 247] मदनसायक.

भभभभभभग [सप्तभकारयुतैकगुरुर्गदितेयमुदारतरा मदिरा Chm. 2. 213] मदिरा, लताकुसुम, संगता.

भरनरनरनग (10-12) [मद्रकं भ्रौ नरौ नरौ न्गौ दिगादित्याः P. 7. 26.] मद्रक, विशुद्धचरित, भद्रक, प्रभद्रक.

मतयननननग [मत्यनी(नचतुष्क)गा वरतनुः H. 2. 356] कौञ्चा, वरतनु.

ममतननसग [मौ मौ नाश्चत्वारो गो गो वसुभुवनयतिरिति भवति हंसी Chm. 2. 212] हंसी.

मसजयभभनग [लालित्यं भुजगेन्द्रभाषितमेतच्चेन्मसजभ्भभनगुरुभिः Vr. 3. 100. 3] लालित्य.

मसजसजसजग (12-10) [मूसौ ज्सौ ज्सौ ज्गौ दीपार्चिष्टैः H. 2. 357] दीपार्चि.

मसरसतजनग [लालित्यं भुजगेन्द्रेण भाषितमेतच्चेत् मसरस्तजनगुभिः Chm. 2. 215] लालित्य.

सजतनसररग (8-7-7) [सजता नसौ ररौ गः फणितुरगह्रयैः स्यान्महास्रग्धरा Chm. 2. 216] महास्रग्धरा.

सततनसररग (8-7-7) [सततान्नः सश्च रौ गः फणितुरगयतिः स्यान्महास्रग्धराख्या Jk. 2. 245] महास्रग्धरा.

23 **विकृतिः** (12)

जसजसययलग [ज्सौ ज्सौ यिल्गा वृन्दारकम् H. 2. 364] वृन्दारक.

तजजजजजजलग [शङ्खाख्यमिदं भगवद्गदितं तगणाज्जगणाः षडतो लगुरू Jk. 2. 252] शङ्ख.

नजजजजजजलग [नगणजषट्कलाद्रिति हंसगतिश्च महातरुणीदयितम् Jk. 2. 248] हंसगति, महातरुणीदयित, सुधालहरी.

नजभजभजजलग (11-12) [नजौ भजौ भजौ जलगा अश्वललितं रुद्रादित्यैः H. 2. 358] अश्वललित, हयलीलगति.

नजभजभजभलग (11-12) [नजभजभा जभौ लघुगुरू बुधैस्तु गदितेयमाद्रितनया Chm. 2. 217] अद्रितनया, अश्वललित, ललित.

नजभजसजनलग (11-12) [नजभजसजनलगयुतं रुद्रार्कैर्भिन्न-मश्वललिताख्यम् Mm. 19. 23] अश्वललित.

भभभभभभगग (12-11) [भैरथ सप्तभिरत्र कृता गुरुणा गुरुणा च मयूरगतिः स्यात् Vr. 3. 102. 1] मयूरगति, मदिरा.

भमनभननगग [भमौ नभौ ननना गौ पुष्पसमृद्धा Bh. 32. 290] पुष्पसमृद्धा.

भमसभननलग [भ्मौ स्भौ निल्गाश्चपलगतिः H. 2. 363] चपलगति.

ममतननलग (8-5-10) [मत्ताक्रीडं मौ तौ नौ न्लौ गुरुरपि च विषधरशरविरमणम् Jk. 2. 250] मत्ताक्रीड, विद्युन्माला, मन्दक्रीडा.

रनरनरलग [चित्रकं क्व च रनौ त्रिधा रलगमत्र भात्युरुतरङ्ग-मालिका Jk. 2. 251] चित्रक, उरुतरङ्गमालिका.

ससभसतजजलग [इह सुन्दरिका पिङ्गलमुनिनोक्ता सद्वयतो भसता ज्लभगाः Chm. 2. 219] सुन्दरी, सुन्दरिका.